International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
(An International Peer-Reviewed (Refereed) Journal)
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org
ISSN (Online): 3139-3225

भारत में कंपनी शासनकाल में होने वाले जन विद्रोह विशेष संदर्भ : संथाल विद्रोह, एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ नरेंद्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास,
राजकीय महाविद्यालय कुरसंडा, सादाबाद, हाथरस
*Corresponding author email: singhdrnarendra10@gmail.com

Received: 20 February 2026, Revised: 26 March 2026, Accepted: 16 April 2026, Available Online: 30 April 2026

सारांश (*Abstract)*

भारत में अंग्रेज व्यापारी के रूप में आए थे जिनका मूल उद्देश्य व्यापार में मुनाफा कमाना था लेकिन पतन की ओर अग्रसर मुगल साम्राज्य से उत्पन्न परिस्थितियों का लाभ उठाकर उन्होंने यहां के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया । पहले दक्षिण भारत में कर्नाटक युद्ध के बाद अपनी सत्ता स्थापित की और फिर 1757 ईस्वी में प्लासी तथा 1764 ईस्वी में बक्सर के युद्ध के बाद एक और अपनी युद्ध व कूटनीति से भारत का उपनिवेशीकरण प्रारंभ किया वहीं दूसरी ओर अपनी प्रशासनिक सत्ता को भी सुदृढ़ किया इसका परिणाम यह निकला कि भारत में शोषण और दासता के युग का आरंभ हुआ जिसका विरोध भारतीयों ने जन आंदोलन के रूप में किया, इन्हीं जन आंदोलन में एक प्रमुख जन आंदोलन संथाल विद्रोह था यह विद्रोह सन 1855-1856 ईस्वी में बंगाल तथा बिहार में फैला ,यह विद्रोह उस त्रिगुट के विरुद्ध था जिसे जमीदारों महाजनों तथा अंग्रेजों ने मिलकर वनाया था ,विद्रोहियों का , उद्देश्य इस त्रिगुट को समाप्त कर स्वाधीन संथाल साम्राज्य की स्थापना करना था लेकिन अंग्रेजों ने इस विद्रोह को बड़ी कठोरता से दबा दिया। यद्यपि संथाली अपने उद्देश्य में असफल रहे लेकिन उन्होंने अंग्रेजों द्वारा संथालियों को एक अल्पसंख्यक जाति के रूप में उनकी विशिष्ट स्थिति को मान्यता देने पर मजबूर किया।

मुख्य शब्द -मुगल, मुनाफा, उपनिवेशीकरण, त्रिगुट, स्वाधीन, विशिष्ट पहचान, अल्पसंख्यक जाति।

भारत में अंग्रेजों का आगमन व्यापारी के रूप में हुआ था जिसका मुख्य उद्देश्य व्यापार करना तथा लाभ कमाना था लेकिन पतन की ओर अग्रसर मुगल साम्राज्य से उत्पन्न परिस्थितियों का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने पहले कर्नाटक के युद्ध में विजय प्राप्त कर दक्षिण भारत में अपनी सत्ता स्थापित की तदुपरांत 1757 ई० में प्लासी और 1764 ई०में बक्सर के युद्ध के बाद अपनी स्थिति को मजबूत किया। एक और जहां उन्होंने युद्ध व कूटनीति से अंग्रेजी साम्राज्य का भारत में विस्तार किया वही दूसरी ओर उसे सुद्धण प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत एकीकृत किया। यद्यपि अंग्रेज मानते थे कि इस व्यवस्था से भारत के आम जन में शांति व सुरक्षा का वातावरण स्थापित होगा लेकिन दूसरी ओर इस व्यवस्था से देश में शोषण तथा दासता के युग का प्रारंभ हुआ जिसका परिणाम अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनता मे विद्रोह का उभार था ।(1)

भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरुद्ध होने वाले इन जन आंदोलन का प्रमुख साक्षय अंग्रेजी काल के सरकारी दस्तावेजों, पत्र तथा गोपनीय रिपोर्ट है जिसमें इन जनविद्रोह को हिंसात्मक कार्य, सांप्रदायिक दंगों तथा डकैती का नाम दिया गया है, इसका प्रमुख कारण अधिकांश विद्रोहियों का अशिक्षित होना था जिसके कारण उनके द्वारा कोई लिखित प्रमाण नहीं छोड़ा गया । वर्तमान समय में शोधकर्ताओं का एक ऐसा वर्ग उभरा जिन्होंने साम्राज्यवादी दावों का खंडन करते हुए स्पष्ट किया कि इन जन विद्रोह का प्रमुख कारण साम्राज्यवादी शोषण था जिसके विरुद्ध विद्रोहियों ने अपनी आवाज बुलंद की। (2) इन जनविद्रोह के प्रमुख तत्व अंग्रेजों द्वारा स्थापित आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक ,सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्था में देखे जा सकते हैं । अंग्रेजी शासन काल में होने वाले जन विद्रोह का आरंभ स्वयं के ऊपर होने वाले अत्याचारों का विरोध करना था लेकिन इसमें समय के साथ-साथ सुधारवादी तथा पुन स्थापना की प्रवृत्तियां देखी गई। कंपनी के शासनकाल में बंगाल ,बिहार ,उड़ीसा ,मध्य भारत तथा पश्चिमी भारत में होने वाले अनेक जन विद्रोह हुए जिनमें संथाल विद्रोह प्रमुख था। इस जन विद्रोह को भारतीय इतिहास में एक मील का पत्थर कहा जाता है।

संथाल विद्रोह जिसे संथाल हूल के नाम से भी जाना जाता है 1855 - 56 ईस्वी में बंगाल बिहार अंचल में हुआ था । संथाल स्वभाव से शांतिप्रिय जनजाति थी जो कि कृषि व शिकार का कार्य करते थी । संथाल लोग कटक ,ढालभूमि, वीर भूमि ,मांनभूमि ,छोटा नागपुर ,पलामू, हजारीबाग भागलपुर, गोड्डा ,पाकुड़ ,पूर्णिया, मेदिनीपुर बाकुडा तथा मुर्शिदाबाद आदि स्थानों पर निवास करते थे ,भागलपुर प्रमुख संथाल आंचल उन दिनों दामिनीकोह या दामन -ए-कोह कहलाता था ।(3) एक अंग्रेज जॉर्ज कैंपबेल ने संथालों की प्रशंसा करते हुए लिखा हैं कि “संथाल लोग न केवल जंगलों को साफ करने व जमीन को कृषि योग्य बनाने में परिश्रम ही नहीं , बल्कि निपुण भी हैं ”।(4)

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि शांति प्रिय संथालों ने विद्रोह का रास्ता क्यों अख्तियार किया, इस संबंध में अनेक इतिहासकारों के विचारों का अध्ययन करने के उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि इस विद्रोह का मकसद एक और जमीदारों महाजनों तथा अंग्रेजों के शोषण, दसता, भ्रष्टाचार तथा भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाना तथा दूसरी ओर उनके आधिपत्य को समाप्त करके स्वाधीन संथाल की राज्य की स्थापना था।

1757 ईस्वी तथा 1764 ईस्वी में प्लासी और बक्सर के युद्ध में विजय के बाद बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में अंग्रेजों का शासन स्थापित । आरंभ में अंग्रेज प्रशासनिक उत्तरदायित्व से दूर रहना चाहते थे अत: रॉबर्ट क्लाइव ने बंगाल में द्वैध शासन की स्थापना की लेकिन यह व्यवस्था असफल सिद्ध हुई, जब वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का गवर्नर तथा गवर्नर जनरल बना तो उसने भी यहां की राजस्व वसूली में सुधार करने का प्रयास किया लेकिन उसे असफलता का सामना करना पड़ा। वारेन हेस्टिंग्स के बाद लॉर्ड कॉर्नवालिस बंगाल का गवर्नर जनरल बना तो उसने बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में राजस्व वसूली की एक नई व्यवस्था की शुरुआत की जिसे इसमतदारी व्यवस्था कहा जाता है, इस व्यवस्था के अंतर्गत एक नए वर्ग जमींदारों को लगान वसूली का अधिकार दिया गया जबकि वास्तव में जमीदार जमीन के मालिक नहीं थे,संथाल जो कि सदियों से जमीन को जोतते आए थे जमींदारों के चंगुल में फंस गए तथा लगान की बढ़ती हुई दरो के कारण पुस्त दर पुस्त वह अपनी कृषि योग्य भूमि से बेदखल होने लगे । जॉर्ज कैंपबेल ने संथालों की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि " संथालों का मानना था कि जमीन उनकी है क्योंकि उन्होंने इसे पहले जोता है अगर वह जमीन से बेदखल किए जाते थे तो वह जंगल की ओर भीतर ऐसी जगह चले जाते थे जहां पर सताए नहीं जाएंगे ओर नए खेत तैयार करते थे लेकिन दुर्भाग्य अब वह उस हद तक पहुंच चुके थे जहां से आगे बढ़ना मुश्किल था ."अर्थात संथाल नई जगह पर भी शांति मय जीवन व्यतीत नहीं कर सके ।(5) वहीं जमीदार जिन्होंने पूर्व में उन्हें जमीन से बेदखल किया था जल्द ही पुनः तंग करने लगे जब तक संथाल जंगल साफ नहीं करते थे तब तक यह वर्ग शांति से बैठा रहता था लेकिन जब वह जंगलों को साफ कर उसे खेती योग्य बना लेते थे तो शीघ्र ही यह उस क्षेत्र में जमींदारी व मालगुजारी का दावा करता था । 1856 में कोलकाता रिव्यू ने लिखा है कि " दमन की सीमा पर रहने वाले जमीदार भी संथालों की जमीनों पर अपनी गिद्ध भरी दृष्टि डालने लगे हैं उसने एक ऐसी मिसाल दी जिसमें आम हालात का पता चलता है ,गंगाधर एक समृद्धशाली जमीदार है उसकी जमीदारी की हद दमन की सीमा से मिलती है सरहद के अंदर मानिक संथाल का एक छोटा सा उपजाऊ खेत है जिसे उसने अपने कठोर श्रम से तैयार किया और 5 वर्ष इस खेत की लगान दी है, गंगाधर का इस क्षेत्र पर कोई दवा नहीं हो सकता लेकिन उसके वाप, दादा , परदादा में से किसी ने यह खेत लिख दिया था लेकिन मानिक संथाल प्रति माह ₹6 की छोटी रकम लगाने में कोई हर्ज नहीं समझता था"।(6)

जमीदारों के अतिरिक्त एक पक्ष इस क्षेत्र में और भी था जोकि जोंक की तरह सथालो का खून चूस रहा था वह था साहूकारों और महाजनों का , वर्ग ,जो कि व्यापार तथा लाभ का अवसर देखकर इस क्षेत्र में आया था। इस वर्ग के लोगों में वर्धमान तथा वीर भूमि के मयरा, बनिया तथा शाहाबाद, छपरा ,बेतिया तथा आरा के भोजपुरी तथा भाटिया परिवार प्रमुख थे । साहूकार वर्ग कर्ज देकर संथालों ओर उनके परिवारों को अर्द्ध दास बना लेते थे तथा बड़ी चालाकी से उनकी फसलों को हड़प लेते थे । कोलकाता रिव्यू ने इस वर्ग द्वारा संथालों पर किए गए अत्याचारों का वर्णन करते हुए लिखा है कि "जमीदार ,महाजन तथा सरकारी अमले ने एक ऐसे त्रिगुट का निर्माण किया जिसने भोले भाले संथालों को न केवल ठगा बरन उन पर जुल्म ढाए ,संथालों से ₹50 से लेकर ₹500 तक का सूद वसूलना, हाटो में उनके माल को कम कीमत पर लेना तथा कम तोलना तथा उनके खेतों में मवेशी छोड़कर उनकी फसलों को नष्ट करना अगर कोई संथाल मुआवजे की मांग करता तो यह वर्ग उनको कठोर यातनाएं देते था "।(7) इसके अतिरिक्त कार्य की शर्त के रूप में दासता का पट्टा लिखना भी शोषण का एक अन्य रूप था। यह महाजन और साहूकार किस तरह संथालों को गुलाम बना रहे थे उस संबंध में एक इतिहासकार ने लिखा है कि "अधिकांश संथालों के पास भूमि

या फसल नहीं होती थी जिसकी एवज में वह कर्ज ले सकते अगर इस वर्ग के किसी व्यक्ति को अपने पिता का दहा संस्कार करने के लिए कुछ पैसों की जरूरत होती तो वह महाजन के पास जाता क्योंकि उसके पास स्वयं तथा अपने बाल बच्चों के श्रम को छोड़कर गिरवी रखने के लिए कुछ नहीं होता था तो वह यह लिखने के लिए बाध्य था कि जब तक कर्ज नहीं चुकाएगा तब तक वह तथा उसका परिवार दास रहेगा इस प्रकार ना तो वह कर चुका पाता था और ना ही महाजन उसे कर्ज से मुक्त करता था ”। (8) इस प्रकार संथाल बंधुआ मजदूरी की कुप्रथा में फसते जा रहे थे । श्रीकठ के असिस्टेंट कमिश्नर डब्लू .सी टेलर ने नया दुमका के डिप्टी कमिश्नर ए. आर थॉमसन को लिखा कि “ संथाल लोग महेशपुर तथा पाकुड़ के राजा को नफरत की निगाहों से देखते हैं क्योंकि उन्होंने संथालों के गांव का पट्टा गैर संथाली बंगाली जमीदारों व महाजनों को दे दिया था”।(9)

संथाल विद्रोह का एक अन्य कारण भारत में, उपनिवेशीकरण की गति को तीव्रता प्रदान करने के लिए रेल निर्माण का कार्य था इस कार्य में लगे अंग्रेज कर्मचारी संथालों पर अनेक तरह के जुल्म ढाहते थे जिसका वर्णन करते हुए इतिहासकार ने लिखा है कि “ रेल निर्माण में जो अंग्रेज कर्मचारी लगे थे वह बिना कीमत चुकाए बलात संथालों के बकरे - बकरियों ,मुर्गी -मुर्गियां ले जाते थे अगर कोई संथाली इसका विरोध करता था तो उन पर वह अत्याचार करते थे उनकी महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते , उनका बलात्कार करते थे यहां तक की उन्होंने दो संथाली महिलाओं तथा एक पुरुष की हत्या भी की थी”।(10) अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध जब संथाल न्यायालय में जाते थे तो वहां उनके साथ भेदभाव किया जाता था।

इस प्रकार लंबे समय तक अत्याचारों को सहने के बाद संथालों ने इस त्रिगुट का प्रतिकार करने का निर्णय लिया यद्यपि इससे पूर्व भी संथालों ने 1831 ईस्वी, 1820 ईस्वी तथा 1831 ईस्वी में अपनी आवाज बुलंद की थी लेकिन इस बार संथाल आर पार की लड़ाई के लिए तैयार थे । 1854 के आरंभ में उन्होंने जमीदारों तथा महाजनों पर हमले करना प्रारंभ कर दिए। संथालों की इस कार्रवाई पर पाकुड़ के प्रसिद्ध वकील दिगंबर चक्रवर्ती ने क्रमबद्ध तरीके से जो विवरण दिया है उसके अनुसार “मेयरा और डीको (बंगालियों को संथाल किस नाम से जा पुकारते थे) सासन के वीर सिंह के नेतृत्व में लछीमपुर में होने वाली गुप्त सभाओं जिसमें बोयरो के वीर मांझी ,सिंदरी के काबले प्रमानिक तथा हाथबंथा के डोमन माझी शामिल थे से घबरा गए थे तथा इन्होंने अंबा परगना पाकुड़ के राजा की जमीदार रानी क्षेम सुंदरी से सहायता की मांग की रानी के दीवान बाबू जगबंधु ने हुक्म दिया कि वीर सिंह को कचहरी में हाजिर किया जाए, हाजिर होने पर उस पर जुर्माना आयात किया तथा उसे व उसके साथियों को वेरहमी से पीटा गया” ।(11) इसी प्रकार जमीदारों के अनुरोध पर दीघी थाने का दरोगा महेश लाल दत्त संथाल डकैतों को गिरफ्तार करने उनकी बस्ती में आया इस बस्ती में गोको या गोचो नामक समद्ब संथाल रहता था जिसे उसने गिरफ्तार कर बेइज्जत किया लेकिन सबूत के अभाव में उसे गोको व उसके साथियों को मुक्त करना पड़ा लेकिन दरोगा का यह कार्य संथालों में असहनीय था, ठीक इसी समय दरोगा महेश लाल दत्त ने सतकठिया गांव जाकर संथालों पर जुल्म ढाया, इस घटना ने आग में घी का काम किया।1855 ईस्वी के आरंभ में वीर भूमि, बांकुरा ,छोटा नागपुर तथा हजारीबाग के लगभग 6000 से 7000 संथाल पिछले वर्ष अपने साथियों पर हुए जुल्मों का बदला लेने के लिए एकत्र हुए उनकी यह शिकायत थी कि उनके साथियों को तो सजा दे दी गई लेकिन उन महाजनों तथा जमीदारों को दंडित नहीं किया जिनके जुल्मों से तंग आकर उन्होंने कानून का उल्लंघन किया था”।(12)

संथालों की इस सभा में जो निर्णय लिए गए उन्हें सभी संथालों तक पहुंचा दिया गया इसके लिए उन्होंने साल के वृक्ष की एक शाखा को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया (आज भी यह वृक्ष संथालों में एकता का प्रतीक माना जाता है) 30 जून 1855 ईस्वी को भगानाडीह गांव में होने वाली सभा में 400 गांव के लगभग 10000 संथालों ने भाग लिया यह गांव सिद्धू, कान्हू ,चांद और भैरव (चारों भाइयों)की जन्मस्थली था सिद्धू और कान्हू ने सभा को संबोधित करते हुए संथालों पर होने वाले जुल्मों का वर्णन किया और घोषणा की कि स्वयं ईश्वर ने उन्हें इस कार्य के लिए चुना है और स्वर्ग से उन्हें यह संदेश प्राप्त हुआ है। उनके अनुसार संथाल देवता ने उन्हें 7 दिनों तक विभिन्न रूपों में जैसे श्वेत वस्त्र धारण किये पुरुष ,अग्नि ज्वाला और उसके मध्य चाकू और साल के तने के रूप में दर्शन दिए हैं ,इसके अलावा उन्हें स्वर्ग से लिखित संदेश व पुस्तक भी मिली है इन संदेशों को गुप्त रूप से विभिन्न स्थानों पर भेजा गया।(13)

कोटेरे दस्तूर जी ने संथाल विद्रोह के आरंभ होने से पूर्व की तैयारी का विवरण देते हुए लिखा है कि "प्रत्येक गांव में सिद्धू और कान्हू द्वारा एक पत्तल, धूप में सुखाएं चावल ,तेल और हल्दी भेजी गई इसके साथ यह भी संदेश दिया गया कि इसका प्रयोग करने से संथालों में आत्मशक्ति और आत्मऊर्जा का विकास होगा और उनमें संघर्ष करने की क्षमता बढ़ेगी,इस दौरान कुछ अफवाहों का भी बाजार गर्म रहा जिसके परिणाम एक और घरों में स्वच्छता पर वल दिया गया वहीं दूसरी ओर अनेक स्त्रियों को चुड़ैल घोषित कर उनका उन्हें मार दिया गया"(14) जो की एक घणित कार्य था।

आरंभ में संथाली नेताओं ने अंग्रेज सरकार ,भागलपुर के कमिश्नर ,मजिस्ट्रेट दीघी व टिगड़ी थाने के दरोगा तथा जमीदारों के पास पत्र भेजे और यह उनके द्वारा दिया गया एक प्रकार से अल्टीमेटम था । पत्र में उन्हें 15 दिनों के भीतर इसका जवाब देने के लिए कहा गया, इन पत्रों में संथाल नेताओं ने इस त्रिगुट का दमन कर इस क्षेत्र में स्वतंत्र सरकार बनाने का ऐलान किया (15) साथ ही साथ उन्होंने यह भी घोषणा की कि लोहारो ,तेलयो, चमारों तथा डोमो के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी क्योंकि उनकी हमदर्दी हमारे साथ है । (16) यद्यपि सरकार ने विद्रोही नेताओं के पत्रों पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की लेकिन 18 जुलाई 1855 ईस्वी को भागलपुर के कमिश्नर ने बंगाल सरकार के सेक्रेटरी को पत्र लिखा जिससे मालूम होता है कि गैर संथाली जनता द्वारा संथालों को कितनी सहायता प्रदान की गई "हमें जो सूचना मिली है कि ग्वाला, तेली व अन्य जातियां संथालों को जुल्म करने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं, यह लोग गुप्तचरों का काम करते हैं, उनके लिए नगाडा व डुगडुगी बजाते हैं उनकी कार्रवाई का संचालन करते हैं इन लोगों को तथा लोहार जो संथालों के तीर व कुल्हाड़ी बनाते हैं वह भी सजा के हकदार हैं और सरकार जो भी करवाई विद्रोहियों के खिलाफ मुनासिब समझती है उसमें इनको भी शामिल करना चाहिए "।(17)

जून 1855 ईस्वी को विद्रोह का आरंभ हुआ तथा यह घोषणा भी प्रसारित की गई कि सिद्धू और कान्हू को सुबा ठाकुर की पूजा और संथालों का नेतृत्व करने का आदेश मिला है इसके अतिरिक्त प्रत्येक घर से एक व्यक्ति को विद्रोह में शामिल होने का निमंत्रण देते हुए दीकू के शासन की समाप्ति तथा स्वाधीनता की घोषणा की गयी तथा आदेश की अवहेलना करने पर हत्या का भी आदेश दिया गया था। विद्रोह के आरंभ के विषय में एक इतिहासकार ने लिखा है कि " सभा में ही कोलकाता अभियान की घोषणा की गई और इसके बाद यह अभियान आरंभ हो गया इस

अभियान में संथालों की संख्या 30000 थी जब तक संथालों के पास पर्याप्त मात्रा में रसद सामग्री रही यह अभियान शांतिपूर्ण पर ढंग से चलता रहा लेकिन जब खाद्य रसद समाप्त हो गई तो विद्रोहियों के पास दो ही विकल्प वचे थे लूट या जबरन खाद्य सामग्री को एकत्र करना ,संथाल नेताओं ने पहला विकल्प चुना लेकिन साधारण संथालों ने दूसरा विकल्प "।(18)

विद्रोह के आरंभ में संथालों के पहले शिकार पांचखेतिया बाजार के मानिक चौधरी, गोराचंद सेन ,सार्थक रक्षित, निमाई दत्त तथा हीरू दत्त पांच बंगाली महाजन थे इन्होंने संथालों पर बहुत बहुत जुल्म किए थे विद्रोहियों ने इन पांचो की हत्या कर उन पर किए गए जुल्मों का बदला ले लिया । इसी बीच जब महाजन से घूस लेकर दिघी का दरोगा महेश लाल दत्त पांचखेतिया बाजार सिद्धू और कान्हू को गिरफ्तार करने आया तब विद्रोहियों ने उसे व उसके हमराहो सहित बंदी बना लिया और संथाल अदालत में पेश किया ,अदालत ने उसे मृत्यु दंड दिया । सिद्धू ने महेश लाल दत्त की हत्या की साथी उसके हमाराहो को भी मौत के घाट उतार दिया।

जुलाई माह के प्रारंभ में विद्रोह का प्रसार तीव्रता से हुआ विद्रोही जमीदारों, महाजनों तथा गौरो को निशाना बना रहे थे। संथालों की गतिविधियों का वर्णन करते हुए एक इतिहासकार लिखते हैं कि "जब विद्रोह का आरंभ हुआ उस समय आंचल में नियुक्त 1200 सैनिकों को 80 मील में फैले विद्रोहाचल में कहीं खोजे नहीं पाया गया ,15 दिनों तक विद्रोही पश्चिम के जिले में गदर करते रहे जुलाई माह के समाप्त होने से पहले सैकड़ो गांव जला दिए गए, मवेशी लूट लिए गए, अंग्रेजी सेना विभिन्न स्थानों पर परास्त होती रही ,दो अंग्रेज महिलाओं समेत कई कर्मचारी मारे गए ,अंग्रेजों के केंद्र व नील की कोठियां लूटी गई, वीरभूमि के सिउडी की हालत खराब थी, एक अंग्रेज अधिकारी दिन रात अपने घोड़े को तैयार किए बैठा रहता था, जेल खानों को सुरक्षित किया गया तथा खजाने की रकम को कुएं में छुपा दिया गया था "।(19)

गोड्डा महकमें के कुरछरियो थाने का दरोगा प्रताप नारायण था जिसने संथालों में फूट डालने का प्रयास किया महेश लाल की तरह उसकी भी हत्या कर दी गई इसी प्रकार खान साहब नाम से विख्यात दरोगा की हत्या कान्हू द्वारा की गयी। इसके बाद विद्रोहियों ने बाराहाइत पर हमला किया और कई अत्याचारी महाजनों को मौत के घाट उतार दिया। यहां विद्रोहियों ने स्वयं को छोटे-छोटे गुटों वाट कर दूसरे इलाकों में हमले प्रारंभ कर दिए । सरकारी मुलाजिम विद्रोहियों से इतने खौफजदा थे कि डाकिया ,चौकीदार तथा थानों में तैनात सिपाही नौकरी छोड़कर भाग गए । विद्रोहियों ने चारों ओर यह घोषणा कर दी कि कंपनी का राज्य समाप्त हो गया तथा स्वाधीन संथाल राज्य की स्थापना हो चुकी है।

गोड्डा में विद्रोही दल का नेतृत्व गोको कर रहे थे तथा वह यहां के जालिम महाजनों को दंडित कर रहे थे उन्होंने इस अंचल के बदनाम नीलहे जॉन फिश पैट्रिक की रियासत पर भी धाबा बोला, पाकड़ जमीदारी के अंबर परगने पहुंचने पर उनकी सिंगरई संथाल से मुलाकात हुई दोनों ने लक्ष्मणपुर लूटने के बाद लिट्टीपाड़ा पर आक्रमण कर वहां के जालिम महाजन तीसरी भगत व तिलक को दंडित किया करने का प्रयास किया लेकिन वह पहले ही भाग गया विद्रोहियों ने उनकी संपत्ति को आग के हवाले कर दिया तथा उनके करिंदों की हत्या कर दी। जीतपुर गांव के महाजन को वहां के गांव वालों ने पड़कर विद्रोहियों के हवाले कर दिया उसका भी वही हश्र हुआ इसके बाद विद्रोहियों ने

हिरणपुर को लूट तथा यहां गोको की मुलाकात प्रमुख संथाल नेता त्रिभुवन से हुई और दोनो मिलकर सामंती शोषण के प्रधान केंद्र पाकुड़ की ओर बढे।

पाकुड़ के सभी महाजनों ने जमीदारी के अंबर परगने के दीवान बाबू जगबंधु से सहायता की मांग की लेकिन उन्होंने महाजनों को इस क्षेत्र को छोड़ने की सलाह दी सिद्धू और कान्हू, चाद तथा भैरव ने तीन दिनों तक पाकुड़ को घेरे रखा चौथे दिन 12 जुलाई को चारों ने राजमहल में प्रवेश किया और उसे लूटा तथा बचे महाजनों को मौत के घाट उतारा । यहां से विद्रोहियों के जाने के बाद यहां का सबसे प्रसिद्ध महाजन दीनदयाल अपने दल के साथ वापस आया और गरीब संथालों का शोषण करने लगा परिणामस्वरूप विद्रोही पुनः पाकुड़ आए और दीनदयाल को बंदी बनाया तथा सबसे पहले संथालों के कुत्तों ने उसे नोचा तथा बाद में उसके एक पूर्व संथाल भ्रत्य जगन्नाथ ने फरसे से उसके एक-एक अंग को काटा ,उंगली काटते वक्त वह चिल्ला रहा था कि इन उंगलियों से तुम अपने शोषण का धन गिनते थे तथा हाथ काटते वक्त उसने कहा इन हाथों से तुम भूखे गरीबों का अन्न छींनते थे आखिर में दीनदयाल का सर काट कर जगन्नाथ ने उसे उसके अमानवीय शोषण का दंड दिया ।(20) विद्रोहियों ने दीनदयाल के सर को पास के चक्रपाणि मंदिर में रख दिया ताकि सभी अत्याचारी उसे देख कर भविष्य में ऐसा कृत्य न करें ।

पाकुड़ के बाद विद्रोही मुर्शिदाबाद की ओर बढे और बीच में उन्होंने कलिकापुर, बदलापुर नबीनगर के महाजनों को दंडित किया, महेशपुर के राजप्रसाद को लूटा, 15 जुलाई 1855 ईस्वी को सिद्धू , कान्हू तथा भैरव के नेतृत्व में 4000 संथालियों की भिड़ंत अंग्रेजी सेना से हुई जिसमें वह तीनों घायल हुए और करीब 200 संथाली मारे गए दूसरी तरफ त्रिभुवन संथाल तथा मानसिंह माझी के अधीन 5000 संथाली विद्रोहियों ने दुमका के पास नील कोठी पर हमला किया और शोषण के प्रतीक , इस इमारत को ध्वस्त कर दिया लेकिन यहां विद्रोहियों ने आवेश में आकर दो अंग्रेज महिलाओं की हत्या कर दी परिणामस्वरूप सिद्धू और कान्हू ने इन महिलाओं के हत्यारों को दंडित किया।(21)

सरकार विद्रोहियों की कार्यवाहियों का दमन करने के लिए बड़े स्तर पर तैयारी कर रही थी जब कलगंज के नीलेह बार्नेस ने भागलपुर के कमिश्नर को चिट्ठी लिखी तब कमिश्नर ने मेजर वरोज को राजमहल जाकर विद्रोहियों का दमन करने का आदेश दिया 11 जुलाई 1855 ईस्वी को मेजर वरोज ने भागलपुर के कमिश्नर को पत्र द्वारा सूचित किया कि विद्रोही किन-किन तरीकों से संघर्ष कर रहे हैं अपने पत्र में उसने लिखा कि " हमने सुना है कि विद्रोही छोटे-छोटे जत्थे बनाकर चलते हैं लेकिन ढोल नगाड़ों की आवाज सुनते ही 10000 - 10000 विद्रोही लूटपाट के लिए एकत्र हो जाते हैं मेरे अधीन सैनिकों की संख्या इतनी कम है कि अगर मैं उसे भी छोटे दस्तों में विभाजित कर दू तो उनमें युद्ध लड़ने की क्षमता नहीं रहेगी "। (22) मेजर वरोज की अनुशंसा पर एक बड़ी सी तैयार की गई, दानापुर छावनी से सेना भेजी गई इसके अतिरिक्त छोटा नागपुर ,हजारीबाग तथा मुंगेर के मजिस्ट्रेटों ने भी हथियारबंद सिपाही तथा हाथी भेजें, जमीदारों और नीलहो ने भी विद्रोह के दमन में सरकार की , हरसंभव मदद की।

16 जुलाई 1855 ईस्वी को भागलपुर के प्यालापुर के पीरपैंती मैदान में विद्रोहियों और मेजर वरोज की सेना के मध्य युद्ध हुआ लगभग 5 घंटे चले इस संघर्ष में अंग्रेजों को पराजय का सामना करना पड़ा इस संघर्ष में 25 सैनिक मारे गए तथा स्वयं मेजर वरोज ने भाग कर अपनी जान बचाई । उसने इस संघर्ष के विषय में लिखा कि " विद्रोहियों

ने मैदान में दृढ़ता से मुकाबला किया तथा वह हाथों से तीर चलाते ही थे साथ ही जमीन पर बैठकर पैरों से भी तीर छोड़ते थे इसके अतिरिक्त वह एक विशेष प्रकार के जंगी कुल्हाड़ी का भी इस्तेमाल करते थे"।(23)

पीरपैंती मैदान में अंग्रेजों की हार ने समूचे संथाल क्षेत्र में विद्रोहियों के वर्चस्व को स्थापित किया अतः परिस्थितियों अनुकूल ना होता देख भागलपुर के कमिश्नर ने बड़े लाट साहब (गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी)को पत्र लिखा और इस क्षेत्र को फौज के अधीन करने की सिफारिश की परिणामस्वरूप 19 जुलाई 1855 को उपद्रव ग्रस्त इलाके में मार्शल लॉ का ऐलान किया गया और कहा गया कि संघर्ष ने खुली बगावत का रूप ले लिया है जो बागी हथियार से लैस पाए जाएंगे उन्हें दंडित किया जाएगा तथा जो इन विद्रोहियों को गिरफ्तार करने में सरकार की मदद करेगा उसे पुरस्कृत किया जाएगा। बगावत के मुख्य सरदार के लिए ₹10000, दीवान (जिनकी संख्या 3 से 4 थी)5000 तथा परगने के छोटे मुखियाओं के लिए 1000 इनाम का ऐलान किया तथा फौज को यह भी आदेश दिया कि वह विद्रोहियों के दमन के लिए जो भी कार्रवाई उचित समझे उसे करें।(24)

इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा संथालों का पाशविक दमन आरंभ हुआ जिसमें एक और तोप और गोला बारूद से सुसज्जित अंग्रेज फौज थी दूसरी तरफ परंपरागत हथियारों से लड़ने वाले संथाल थे, फौज संथाली गांव पर आक्रमण कर उनको नष्ट करती हुई आगे बढ़ने लगी अतः अंग्रेजों का मुकाबला ना करते देखा संथालों ने गोरिल्ला युद्ध की रणनीति का सहारा लिया। बाराहाइत विद्रोहियों का प्रमुख केंद्र था जिस समय अंग्रेजी फौज ने यहां हमला किया सिद्धू और कान्हू यही मौजूद थे उन्होंने सेना का मुकाबला किया लेकिन वह अंग्रेजी सेना के समक्ष ठहर नहीं सके और वहां से भाग निकले।

वीर भूमि जिले का आधा हिस्सा अभी भी संथालों के कब्जे में था 21 जुलाई 1855 ईस्वी में विद्रोही विद्रोहियों ने अंग्रेजी सेना को परास्त किया ,23 जुलाई को विद्रोहियों ने गूढपुर गांव को नष्ट किया जब मेजर टोल माइन ने विद्रोहियों पर हमला किया तो वह पराजित हुए और मारे । 29 जुलाई के बाद मेजर शेरगिल में 12 संथाली गांव ,मेजर शकवर्ग ने 15 संथाली गांव को इसी तरह मेजर वरोज तथा मेजर रूबी ने कई संथाली गांव को नष्ट किया इस प्रकार यह 36 गांव के पूर्ण विनाश करने ओर खून सुखा देने वाली कहानी है,।(25) फौज के दमन से राजमहल की पहाड़ी खून से सरोवर बन गई लेकिन इसके बावजूद संथाल चट्टान की तरह डटे रहे । एक अंग्रेज ने उनकी हिम्मत ,साहस ओर वीरता की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि " यदि संथाल हार गए लेकिन उन्होंने हथियार डालने से इनकार किया एक मौके पर 45 संथाली विद्रोहियों ने फौज से बचने के लिए एक झोपड़ी में शरण ली जब उन्हें हथियार डालने को कहा तो उन्होंने समर्पण नहीं किया जब गोलाबारी बंद हुई तब सिपाही झोपड़ी के अंदर घुसे तो उन्होंने गोलियों से छलनी संथालियों के शवों को देखा लेकिन जब उन्होंने एक वृद्ध आदमी को जीवित देखा तो एक सिपाही ने उसे समर्पण करने को कहा इतना सुनते ही वह वृद्ध आदमी सिपाही पर टूट पड़ा और कुल्हाड़ी के बार से उसने उसका काम तमाम कर दिया" ।(26)

इस प्रकार बड़े स्तर पर दमन के बावजूद अगस्त के मध्य संथाली अंग्रेजी फौज के समक्ष डटे हुए थे तथा वह मुंगेर के मालेपुर की ओर बढ़ रहे थे 11 अगस्त 1855 को भागलपुर के कमिश्नर ने सरकारी प्रयासों का विवरण देते हुए मुंगेर के मजिस्ट्रेट डब्लू .ई .टकर को लिखा "अभी तक इस बात की कोई गुंजाइश नहीं है कि संथाली सरकार की

अधीनता स्वीकार करने को तैयार हैं उल्टे वह खुल्लम-खुल्ला हमारी फौज को चुनौती दे रहे हैं"। अंत में अगस्त 1855 ई को नदिया के डिवीजनल कमिश्नर ए. सी.विडवेल को संथाल इलाके का विशेष कमिश्नर नियुक्त किया गया इसके बाद एक बार पुनः सरकारी कार्रवाई में तीव्रता आयी, फरवरी 1856 को सिद्धू को सेना ने गिरफ्तार कर मौत के घाट उतार दिया, चांद और भैरव भागलपुर में मारे गए ,फरवरी 1856 के तीसरे सप्ताह में वीर भूमि जिला पुलिस ने कान्हू को गिरफ्तार कर मौत के घाट उतार दिया । इस प्रकार फरवरी 1856 के अंत तक अनेक संथाली नेता फौज के विरुद्ध लड़ते-लड़ते मारे गए और लेकिन किसी ने आत्मसमर्पण नहीं किया।(27)

इस प्रकार अंग्रेजों ने बड़ी क्रूरता से संथाल विद्रोह का दमन किया और अपनी कार्यवाही को जायज ठहराते हुए उन्होंने यह तर्क दिया कि संथालों के अमानवीय कृत्यो के दमन के लिए यह आवश्यक था । एक अंग्रेज ने सरकारी कार्यवाही को जायज ठहराते हुए लिखा है कि "इस विद्रोह ने दिखा दिया कि संथाल कितने क्रूर हो सकते हैं जब वह किसी महाजन को बंदी बना लेते थे तो सर्वप्रथम उसका पैर काट देते थे और व्यंग्यात्मक स्वर में कहते थे यह रुपया का चार आना हुआ फिर टांग काटते थे और कहते थे यह आठ आना हुआ उसके बाद शरीर के दो टुकड़े कर देते थे और कहते थे बारह आना हुआ और अंत में उसके सर को उतार लेते थे और सब चिल्लाकर एक स्वर में कहते थे कि रुपए में सोलह आने पूरे हो चुके हैं"।(28)

लेकिन प्रश्न उठता है कि शांति प्रिय संथाल हथियार उठाने के क्यों विवश हुए इसका उत्तर , त्रिगुट द्वारा लंबे समय उन पर किया गया अत्याचार था और उनका गुस्सा ज्वालामुखी की तरह उनके भीतर धधक रहा था जो विस्फोट के गुबार के रूप मैं निकला । सरकार ने संथालों के दमन के लिए जो कार्रवाई की थी उनके सामने संथाली हिंसा कुछ नहीं थी । बालफूर की भारतीय एनसाइक्लोपीडिया में इस विद्रोह के बारे में लिखा है कि "यह विद्रोह बिना रक्तपात के नहीं दबाया गया ,इस विद्रोह में 30 से 50000 संथाली विद्रोहियों में से 15 से 25000 विद्रोहियों को मौत के घाट उतारा गया था"। (29) इसके अतिरिक्त एक अंग्रेज सेनापति ने संथालों के विरुद्ध युद्ध का वर्णन करते हुए लिखा है कि "हमारी सेना में कोई ऐसा सैनिक नहीं था जिसे संथालों के साथ युद्ध करने में शर्म ना आई हो, प्राय सभी संथाल गोलियों से छत विक्षत थे यह कहना कि संथालों ने विषाक्त तीरो का उपयोग किया यह अपने आप मैं सोलह आने झूठ है"। (30) इसी प्रकार एक अंग्रेज सेनापति ने लिखा है कि "हमने जो किया वह युद्ध नहीं था जन हत्या थी"।(31)

संथाल विद्रोह में अनेक गिरफ्तारियां हुई और असंख्य संथालों को बतौर बंधक बनाकर रखा गया इस विषय पर एक इतिहासकार ने लिखा है कि "संथाल परगने के डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में संथाल कैदियों की दो बड़ी फाइलें हैं, इन फाइलों की अभी तक जांच पडताल नहीं की गई है ,हमें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि कितने संथालियों पर मुकदमा चलाया गया और कितने संथालियों को सजा दी लेकिन इन फाइलों में से एक मुकदमे का पता चलता है उससे जानकारी मिलती है कि परगने की अदालत में 52 गांव के 253 संथालियों पर मुकदमा चलाया गया जिसमें 191 संथाली थे बाकी ग्वाला डोम धाकड़ तथा भूईयाँ गैर संथाली थे इनमें 46 बच्चे थे जो 9-10 वर्ष की आयु के थे, बच्चों को बैत से पीटने की सजा दी गई तथा बचे संथालियों को 7 से 14 वर्ष की सजा दी गई।(32)

यद्यपि संथाल विद्रोही अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए लेकिन उन्होंने अपनी नेतृत्व क्षमता, संगठन आत्मक कुशलता तथा रण कौशल व सामाजिक भाईचारे से अपने विरोधियों को भी प्रभावित किया। अन्य जनजातीय की तरह संथालियों ने भी अपने आंदोलन को सफल बनाने के लिए धर्म का सहारा लिया और ईश्वर को मुक्तिदाता के रूप में प्रस्तुत किया। इस आंदोलन का एक पक्ष घरों में स्वच्छता थी वहीं दूसरा दुखद पहलू महिलाओं को चुड़ैल घोषित कर उनकी हत्या कर देना था । अंग्रेजों ने भी सबक लेते हुए संथाल क्षेत्र का पुनर्गठन करते हुए संथाल परगने को एक पृथक प्रशासनिक इकाई में संगठित किया तथा ईसाई मिशनरियों को छोड़कर बाहरी लोगों के इस क्षेत्र में आगमन पर रोक लगाई (अब वह सेवा भाव से संथालियों ईसाईकरण करना चाहते थे)(33)साथ ही साथ उन्होंने संथालों को एक विशिष्ट अल्पसंख्यक वर्ग के रूप में मान्यता प्रदान की यद्यपि संथाल विद्रोह शांत हो गया लेकिन समय-समय पर उन्होंने अपने ऊपर होने वाले शोषण का विरोध किया तथा भविष्य में होने वाले जन आंदोलन के लिए वह प्रेरणा के स्रोत बने।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- मिल .जे .एस - ब्रिटिश भारत का इतिहास ।

2- शुक्ला.राम लखन- आधुनिक भारत का इतिहास ,हिंदी कार्यान्वन निदेशालय ,दिल्ली विश्वविद्यालय, पेज 190 - 191।

3- सिंह.अयोध्या- भारत का मुक्ति संग्राम, प्रशासन संस्थान ,नई दिल्ली पेज 290।

4- दास.अभय चरण -भारतीय किसान, पेज 564- 565।

5- दास.अभय चरण - उपरोक्त, पेज 554- 555।

6- कलकत्ता रिव्यू- 1856, पेज 238- 240।

7- कलकत्ता रिव्यू - उपरोक्त, पेज 540।

8- हंटर .डब्लू डब्लू - हिस्ट्री ऑफ़ संथाल रिबेलीयन, 1855 ,पेज 123 -124।

9- दत्त .कालिंकर - 1855-1857 का संथाल विद्रोह, (कोलकाता 1940) पेज 07।

10- दत्त .कालिंकर- उपरोक्त, पेज 8।

11 - नटराजन .एल - भारत के किसान विद्रोह (1850 - 1900) स्वर्ण जयंती प्रकाशन ,नई दिल्ली, पेज 3।

12- दत्त . कालिंकर- उपरोक्त, पेज 12।

13- शुक्ला .राम लखन - उपरोक्त, पेज 210।

14- शुक्ला .राम लखन - उपरोक्त, पेज 210।

15- दत्त कलिंकर - उपरोक्त, पेज 14।

16- दत्त .कालिंकर - उपरोक्त, पेज 15- 16।

17- कोलकाता रिव्यू -1856, उपरोक्त।

18- हंटर.डब्लू डब्लू - उपरोक्त , पेज 313।

19- हंटर .डब्लू डब्लू - उपरोक्त , पेज 314।

20 - दत्त .कालिंकर- उपरोक्त , पेज 33-34।

21 - दत्त .कालिंकर - उपरोक्त , पेज 37।

22 - दत्त.कालिंकर - उपरोक्त , पेज 21।

23- नटराजन .एल - उपरोक्त , पेज 37-38।

24- नटराजन .एल- उपरोक्त , पेज 38।

25 - नटराजन.एल - उपरोक्त , पेज 40।

26- मौली.ओ-(बंगाल बिहार उड़ीसा),पेज 40।

27- हंटर .डब्लू डब्लू- उपरोक्त , पेज 316।

28- मौली .औ - उपरोक्त , पेज 193 -194।

29 - बालफूर - भारतीय एनसाइक्लोपीडिया, खंड 3,पेज 527।

30- हंटर.डब्लू डब्लू- उपरोक्त ,पेज 316।

31- सिंह .अयोध्या- उपरोक्त , पेज 298।

32- दत्त.कालिंकर- उपरोक्त, पेज 67- 68।

33 - सिंह.अयोध्या- उपरोक्त , पेज 298।